

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly
Magazine

Issue
58

Year
6

Volume
6

March 2017
Chandigarh

Page
24

मासिक पत्रिका
Subscription Cost
Annual - Rs. 120-see page 6

दुखों को तो हम खुद जन्म देते हैं महात्मा आनन्द स्वामी

दुख दो प्रकार के होते हैं।— पहली श्रेणी में वे दुख आते हैं जिन्हें हम खुद जन्म देते हैं। दूसरे वे जो प्राकृतिक विपदाओं के कारण होते हैं और हमारे वश में नहीं होते।

व्यक्ति पहली श्रेणी के दुखों को वश में कर सकता है क्योंकि आदमी खुद ही अपने लिये उन को पैदा करता है। इन दुखों के मुख्य कारण हैं इच्छाओं का वश में न होना। और व्यक्ति का अभिमान और लोभ। इन दुखों का सम्बन्ध हमारे शरीर व स्वास्थ्य से है। जो वस्तु खानी नहीं चाहिये उसे खाते हैं, जो कार्य नहीं करने चाहिये उसे करते हैं।

दोष तो हमारी बुद्धि का होता है पर शारीरिक दुखों का झुण्ड हमारे सामने खड़ा हो जाता है। महर्षि चरक ने अपने आयुर्वेद शास्त्र में स्पष्ट लिखा है।—प्रत्येक प्रकार के शारीरिक

रोग हमारी अपनी मूर्खता के कारण पैदा होते हैं। इसी प्रकार मानसिक दुख भी हम स्वयं अपने लिये आप पैदा करते हैं।

अपने आप को केन्द्र बनाकर हमारे आसपास जो कुछ है, हम उसे अपना समझ लेते हैं, यद्यपि यह सब कुछ ईश्वर की सम्पत्ति है जो कि उसने हमें हमारे भोगने के लिये दी होती है। अक्सर हम ऐसा समझने लगते हैं कि यह मकान हम ही हैं, व्यापार हम ही है, परिवार हम ही है, उन में किसी को दुख होता है तो हम उसे अपना दुख बना लेते हैं कर्तव्य की भावना से ऐसा करें तो दुख नहीं होगा परन्तु ऐसा हम कर्तव्य की भावना से नहीं

अपितु मोह की भावना से करते हैं। जिस कारण काम, क्रोध, ईर्ष्या, शत्रुता और घृणा सब जाग उठते हैं। इन जलते हुये अंगारों को अपने मन में उत्पन्न करके हम किसी दूसरे का



Contact :

BHARTENDU SOOD

Editor, Publisher & Printer

231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047

Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

कुछ बिगाड़े या न बिगाड़े, पर अपने आप को दुखी अवश्य कर लेते हैं। यह उसी प्रकार है जैसे हम किसी के कपड़ों को गन्दा करने के उद्देश्य से जब किचड़ उठाते हैं तो दूसरे के कपड़े चाहे गन्दे न हों पर हमारे हाथ गन्दे अवश्य हो जाते हैं। यही है अपने लिये दुख उपजाना।

भौतिक ईच्छाएं होना गलत नहीं पर उस सीमा तक जो कि हमारी आवश्यकताओं को पूरा करें। रहने के लिये मकान की ईच्छा गलत नहीं पर यह सोचते रहना कि शहर के सबसे बड़े रईस जैसा ही मकान हो दुख को जन्म दे सकता है। लोभ गलत ईच्छाओं को जन्म देता है, ईच्छाओं की पूर्ती न होने से क्रोध पैदा होता है और क्रोध दूसरों का नुकसान करे न करे पर क्रोद्धि मनुष्य का नुकसान पहले करता है।



एक और प्रकार का मानसिक दुख उन लोगों को सताता है जो सर्वदा जीवन के भददे, गन्दे और धिनोने रूप को ही देखना अपना स्वभाव बना लेते हैं। दूसरों में दोष और बुराईयां ही देखने की आदत बना लेते हैं। उन्होंने ऐसा चश्मा पहना होता है कि दूसरों की अच्छाई उन्हें नजर ही नहीं आती। कहते हैं भौरा शहद को दूँढता है किन्तु मक्खियां गन्द की और ही भागती है। भौरा क्योंकि शहद पर बैठता है इसलिये उसे शहद ही मिलता है और मक्खियां गन्द पर बैठती हैं इसलिये उन्हें गन्द मिलता है। इस लिये दुखों से छुटकारा पाने के लिये हम भौरां बने न कि मक्खी।

दूसरे प्रकार के अपने पैदा किये हुये दुख वे हैं जिन्हें हम न पूरी होने वाली कामनाओं को स्थान दे कर पैदा करते हैं। एक शेखचिल्ली बाजार में चला जा रहा था। एक साहूकार सामान ले का उस के साथ ही जा रहा था। उस साहूकार ने

उसे कहा—सुन यह सामान ले चल तुझे कुछ मजदूरी दे दूंगा। शेखचिल्ली ने जैसे ही सामान उठाया सपनों के महल बनाने शुरू कर दिये। कल्पना के सागर में ऐसे डूबा कि उसने अपने लिये शहर में सब से आलीशान महल कुछ देर में ही बना लिया। तभी ठोकर लगी और सामान का टोकरा जमीन पर लुड़क गया। साहूकार एकदम चिल्लाया—अरे सत्यानाश हो तेरा। तूने मेरा सारा सामान खराब कर दिया।

शेखचिल्ली ने अपने माथे को ठोका और बोला—तू अपने सामान को रो रहा है, मेरा तो महल ही टूट गया। उस शेखचिल्ली की तरह हम भी कितनी बार असम्भव कामनाओं को मन में स्थान देते हैं। जब वे पूर्ण नहीं होती तो रोते हैं, दंखी होते हैं। इसीलिए शास्त्रों ने कहा है—उचित आहार कर, उचित कर्म कर, उचित व्यवहार कर और उचित यत्न कर।

उचित यत्न क्या है? ऐसा यत्न कर जो पूर्ण हो सके—सम्भव यत्न। असम्भव चेष्टा न कर। तेरे पास यदि ढाई हाथ की चादर है तो तू उस में साढ़े तीन हाथ के पांव न फैला। इच्छा कर कर्म भी कर परन्तु इच्छा वह कर जो तेरी शक्ति के अनुसार हों अपनी पहुंच के बाहर जो भी इच्छा करेगा, उसका परिणाम दुख ही होगा।

एक और प्रकार के दुख वह हैं जो अभिमान से पैदा होते हैं। इसी लिये किसी ने कहा है

लेने को हरि नाम है, देने को कुछ दान।

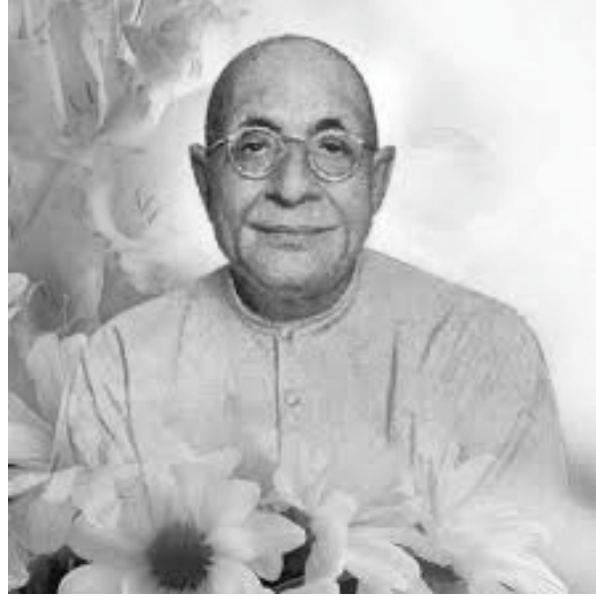
तरन को है नम्रता, डूबने को अभिमान

ठसी अभिमान के कारण रावण जैसा महाबलि मारा गया। वह आसाधारण मनुष्य नहीं था, सारे वेदों का विद्वान था। पर उसका अभिमान ही उसे ले डूबा।

ईर्ष्या और घृणा की अग्नि दहक रही हो तो ईश्वर भजन में दिल नहीं लगता

कई लोग मेरे पास आते हैं कहते हैं—हमारा भजन करने को जी चाहता है। यह भी मानते हैं भजन करने से मन में आनन्द उत्पन्न होता है। किन्तु क्या करें? भजन करने बैठते हैं तो जी नहीं लगता। अरे भोले इन्सानों जी लगे कैसे? तुमने स्वयं ही तो इस में ईर्ष्या और घृणा की अग्नि दहका रखी है। इसे बुझा दो दिल अवश्य लग जायेगा। देखो तुम्हें अपने अनुभव की बात सुनाता हूँ।

मैं जब गृहस्थ आश्रम में था, तो वर्ष में एक या दो माह के लिये एकान्त स्थान में चला जाता। अपने आप को प्रभु के चरणों में अर्पित करने के लिये अपने साथ आटा, कुछ दाल और घी, छोटा सा बिस्तर, थोड़े से कपड़े लेकर, किसी जंगल में जाकर पत्तों की कूटिया बनाता था और उस में रहने लगता। दिन में एक बार



दो रोटियां बना कर खा लेता, शंष समय अपने मन— मन्दिर में अपने प्रभु के दर्शनों का प्रयत्न करता थां

एक बार घर से ऐसी ही तैयारी कर कांगड़ा के जंगला में जा पहुंचा। मौन धारण कर उपासना में जाने की कोशिश करने लगा। मन उपासना में नहीं लग रहा था। और ही तरह के

विचार आ रहे थे, बहुत कोशिश करने पर भी मन ध्यान में नहीं जा रहा था। ऐसा तीन चार दिन तक होता रहा। मन शांत हो ही नहीं रहा था। मैंने दुखी होकर ईश्वर से कहा—प्रभो यह क्या बात है? तेरे द्वार पर आकर भी मेरे चित में शान्ति क्यों नहीं? यही सोच सोच कर दुखी था। प्रातः 5 बजे स्नान कर फिर से भजन के लिये बैठा तो विचित्र बात हुई। ऐसा विदित हुआ जैसे भीतर से एक ध्वनि पुकार रही हों स्पष्ट सादे शब्दों

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कौश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

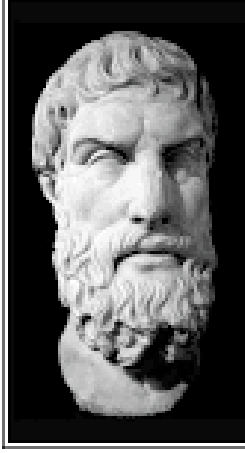
मैं उसने कहा—व्यर्थ है तेरा भजन। व्यर्थ है तेरा आत्म चिन्तन। लाहौर में एक पुरुष है, उस से तू घृणा करता है। जब तक यह घृणा तेरे हृदय में रहेगी, तब तक मन को शान्ति नहीं मिलेगी। भजन में जी लगाना चाहता है तो जा, उस से पहले क्षमा मांग। इस घृणा को त्याग दे जो तेरे मन में उस के प्रति है। मैंने उस ध्वनि को सुना तो अशान्ति का कारण जैसे संजीव हो कर मेरे सामने खड़ा हो गया।

उसी समय मैंने अपना बिस्तर लपेटा। घर में वापिस आया तो घर वाले विस्मय में थे कि यह इतने शीघ्र घर कैसे आ गया? किन्तु मैंने किसी से कोई बात नहीं की। सामान रखा और सीधे उस सज्जन के घर गया। उनके मकान पर जा कर पुकारा। वह पुकार को सुनकर बाहर आये। आश्चर्य से बोले—“आप” मैंने पगड़ी उतारकर उनके चरणों में रख दी और बोला—मैं क्षमा मांगने आया हूँ, मुझे क्षमा करना होगा। वह आश्चर्य में था कि इसे क्या हो गया है। मैंने कहा—आश्चर्य में मत पड़ो जंग लमे अज्ञातवास के लिये गया था। वहीं से अन्तर्ध्वनि हुई कि पहले जो तेरे मन में घृणा बैठी हुई है उस का त्याग कर, तब तेरा चित शांत होगा और उस के बाद ही ईश्वर का भजन सम्भव है। आप जब तक मुझे क्षमा नहीं करेंगे मेरा भजन सम्भव नहीं है। यह सुनते ही उनकी आंखों में आंसु आ गये। अपने सीने से लगा लिया मुझ को। वह भी रोये और मैं भी रोया। परन्तु इस रोने से घृणा की अग्नि शांत हो गई। मैं वापिस जंगल में गया तो भजन में पहले जैसा ही आनन्द आने लगा।

म्हर्षि दयानन्द सरस्वती ने उपासना के विषय में सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है—जब तक हम पांच यम और पांच नियम का पालन करते हुये अपने मन को शुद्ध नहीं कर लेते, ईश्वर से मेल सम्भव नहीं है।

कठोपनिषद में कहा है—

- 1 जो ज्ञानवान नहीं है, जिसका मन व इन्द्रियां वश में नहीं हैं वह भगवान के दर्शन नहीं कर सकता अपितु जन्म मरण के चक्र में ही रहेगा।



If God listened to the prayers of men, all men would quickly have perished: for they are forever praying for evil against one another.

(Epicurus)

izquotes.com

- 2 जिसका व्यवहार दूसरों के प्रति क्रूरता, दम्भ और छल कपट का है, जिनकी वाणी वश में नहीं है, जो ईर्ष्या द्वेष की आग में जल रहे हैं, ऐसे लोग भी भगवान को नहीं पा सकते।
- 3 प्रभु दर्शन वही कर सकते हैं जो आत्मबल बढ़ाने के लिये ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। जो अहिंसा व सत्य के मार्ग पर चलते हैं। जो संसार के पदार्थों को अपने जीवन की यात्रा का एक साधन मानते हैं। वासना की आग को वैराग्य की राख से दबा कर रखते हैं। जिनका मन शान्त है व अहंकार जिन से कोसों दूर है। जो शरीर से स्वस्थ है।

आगे कठोपनिषद में लिखा है—यह संसार वासनारूपी जल से भरा हुआ है परन्तु हे मनुष्य तू ज्ञानरूपी नौका में सवार होकर पार जा सकता है अर्थात् ईश्वर को जान सकता है। ऐसा ज्ञान जो तुझे चित की वृत्तियां और प्रमाद व आलस्य से बचाय रखे।

Looking within is as important as looking at your exterior

Neela Sood



All of us look in the mirror at least ten times a day. There is nothing wrong in it, simply because it is important that we look presentable and pleasing at all times. It is really good if our appearance lightens up the face of other person. Generally, after

looking in the mirror, if we find that something is amiss, we act immediately to correct whether it is by washing the face or combing the hair or readjusting the dress. The whole purpose is to see that our exterior gives an impression of a person who has a pleasing appearance. Once when Mahatma Gandhi was with Guru Ravinder Nath Tagore in Shantiniketan, he found that Gurudev would take unusually long time in front of mirror. Mahatma could not refrain himself from commenting, "You take too much time to get ready. Is it worth?" "Of course, after all it is your physical appearance that strikes any stranger in the first meeting and he must get good impression about you." replied Gurudev. He was absolutely right, first it is our appearance then it is our conduct. But, if our conduct is found wanting it can undo the impression our appearance had made.

It is also a fact that our conduct is largely influenced by our mental state. Therefore, it is as important to look inside as periodically as we take stock of our exterior. By doing this, we can save ourselves from indulging in improper conduct

which not only hurts the other but in process we harm ourselves also as it has a potential to strain our relations with others apart from spoiling our own mood. Say you got furious because of some incident. There are two options before you. First, you carry it and allow it to influence your other activities during the rest of the day. Second, you take a break, sit in solitude and meditate for some time. If opted for second, it is possible that you find that you overreacted and feel remorseful for what you did. Or you conclude that you could have handled the situation in a better way. This is enough to change your thought process and you feel light.



In the matter of mind we need to act as we do while using computer. As we open we put undesired messages in to a trash bin. If we don't do it regularly then the performance of our computer gets affected. Like this we need to remove all such things which take away the peace of our mind simply because it is this peace of mind

which largely influences our conduct, performance at work and our own health too.

Four essentials are –take a break, free yourself from all gadgets like mobile, move to a lonely and peaceful place, review your inner state and listen to the inner voice. It is also a kind of Yoga which takes its own time but another essential is that you believe in some higher self whose communion gives 'viveka' wisdom to differentiate between right and wrong.

Your Faith Your Career
Our Mission Our Goal
Entrust your Child's future in our hands

What inspires

Enrich Academics
Smart rooms with Projectors
Passionate, Dedicated Teachers
Student Teacher Ratio 1:30
Chemistry, Physics, Bio, Maths & Computer Labs
Well Designed Attractive Building

SHASTRI MODEL SCHOOL

(AFFILIATED)

PHASE-1, MOHALI Ph: 0172-2227211

Pre Nursery to +2 (All Streams)
Science / Commerce / Arts

ਜੇ ਪਹਿਲੀਆਂ ਪੰਜ ਲੜਕੀਆਂ ਕਿਸੇ ਵੀ ਜਮਾਤ ਵਿੱਚ
ਅਪ੍ਰੈਲ 2017 ਵਿਚ ਦਾਖਲਾ ਲੈਣਗੀਆਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
ਰੁਪਏ **5000/-** ਦੀ FDR ਵਜ਼ੀਫੇ ਵਜੋਂ ਦਿੱਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।



ਜੇ ਪਹਿਲੀ ਪਾँਚ ਲੜਕੀਆਂ ਕਿਸੀ ਮੀ ਕਖ਼ਾ ਮੇਂ
ਅਪ੍ਰੈਲ 2017 ਮੇਂ ਦਾਖ਼ਿਲਾ ਲੇਂਗੀ, ਤੁਨ੍ਹੇਂ ਰੁਪਯੇ **5000/-**
ਕੀ FDR ਵਜੀਫਾ ਦਿਯਾ ਜਾਯੇਗਾ।

Registration Open

2017-2018

Limited
Seats

Hurry up!

Helpline: 9814411946, 9876516703

Ram Lal Sewak,
PSS (Retd.)
Director/Manager

Mrs. R. Bala
M.A., M.Ed.
Principal

Start your mission, people will come around you

The story goes like this: Some travellers arrive at a village after a long and tiring journey, but the villagers are unwilling to share their food. So the travellers go to a stream, fill the pot with water, put a large stone in it, and place it over a fire. When asked by inquisitive villagers what they are cooking, one traveller responds that they are making stone soup.

A previously unresponsive villager offers a few carrots to help them. Another villager offers some seasoning. More and more villagers walk by, each adding an ingredient. Finally the inedible stone is removed from the pot, and a delicious pot of soup is ready.

नीती शास्त्र के अनुसार व्यक्तियों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है

पहली श्रेणी में वे आते हैं जो कार्य को हाथ में लेने से पहले ही समस्याओं से डर जाते हैं और कार्य को छोड़ जाते हैं।

दूसरी श्रेणी में वे आते हैं जो कार्य को हाथ में लते हैं पर जब समस्याएँ सामने आती हैं तो उनका सामना करने की जगह कार्य से पीछे हट जाते हैं।

तीसरी श्रेणी में वे आते हैं जो कार्य को हाथ में लते हैं समस्याओंका सामना करते हुये अपने उद्देश्य तक पहुंचते हैं। जब तक उद्देश्य प्राप्त नहीं होता लगे रहते हैं।

उपर की कहानी उन को शिक्षा दे रही है जो पहली और दूसरी श्रेणी में आते हैं।

दान कहाँ दें



श्री रविन्दर सूद

मेरी राय में अगर जब भी आप का दान देने का मन हो तो यह भी कर के देखें

- 1 किसी सरकारी अस्पताल में डाक्टर से मिलकर ऐसे व्यक्तियों को दवाईया भोजन की व्यवस्था कर दें जिन के पास इस के लिये धन नहीं।
- 2 किसी सरकारी विद्यालय में मुख्य अध्यापक से मिलकर ऐसे विद्यार्थियों को पुस्तके व कापियों आदि की व्यवस्था कर दें जिन के पास इस के लिये धन नहीं
- 3 कई जगह अनाथालय हैं आप वहाँ पर अनाथ बच्चों की खशी के लिये कुछ भी कर सकते हैं।
- 4 अगर आप लगातार कुछ धन दे सकते हैं तो किसी गांव में एक अध्यापक की वयवस्था कर

दें जो की विद्यार्थियों को रोज एक घटां English पढ़ाये। हम यह सोच भी नहीं पाते की ग्रामीण बच्चों को ठीक पढ़ाई न होने के कारण कितना बढा handicap है। पर इस काम को स्वयं करे किसी पर छोड़े न। पैसे के साथ समय देना उस से भी जरूरी है।

यह तो कुछ उदाहरण है, हो सकता है आपके पास इस से भी अच्छे ढंग और सुझाव हो। यहाँ मैं आपने ही भाई साहबं श्री रविन्दर सूद का उदाहरण दे रहा हूँ, जिन्होंने अपनी स्वर्गवासी पत्नी की पुण्य तिथी पर रक्त दान शिवर लगाया। इस का चित्र दे रहा हूँ।



सद्गुणसंपन्न व चरित्रवान लोगों को तो बुराइयों से और अधिक सतर्क व सचेत रहने की आवश्यकता है

सीताराम गुप्ता



एक नदी के किनारे एक छोटा सा गांव बसा हुआ था। वहीं उस गांव के खेत भी थे। जिस साल नदी में बाढ़ आती बाढ़ का पानी गांव व खेतों में घुसकर काफी नुकसान पहुंचाता। बार-बार आने वाली बाढ़ के नुकसान से बचने के लिए गांव के लोगों ने नदी के तट पर रेत से भरी बोरियां डालकर एक तटबंध बना डाला। तटबंध काफी ऊंचा और मजबूत बना था। तटबंध बनने के बाद उस साल उस पूरे इलाके में तेज़ बारिश हुई और नदी में पानी बढ़ने लगा।

गांव के लोग निश्चिंत थे कि इस बार बाढ़ के पानी का कोई दुष्प्रभाव उन लोगों पर नहीं पड़ेगा क्योंकि पानी तटबंध से बहुत नीचे बह रहा था। तभी तटबंध में उपस्थित एक अत्यंत छोटे से सुराख से पानी रिसने लगा। जब तक लोगों का ध्यान इस सुराख की तरफ गया इस छोटे से सुराख में से रिसने वाला पानी तेज़ धार में बदल चुका था। देखते-देखते घर डूबने लगे और फसलें चौपट हो गईं।

यही बात हमारे चरित्र पर भी लागू होती है। हम कितने ही चरित्रवान क्यों न हों यदि हमारे चरित्र रूपी तटबंध में नदी के तटबंध में हुए छोटे से सुराख की तरह थोड़ा सा भी दोष आ जाता है तो वह हमारे संपूर्ण चरित्र को नष्ट करके ही दम लेगा। हम सबका

यही प्रयास रहता है कि हम सभी सद्गुणों से संपन्न रहें व हमारा व्यक्तित्व प्रभावशाली हो। इसके लिए हम सत्य का आचरण करते हैं, ईमानदारी से कार्य करते हैं और लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं और उनकी मदद करते हैं। जितनी भी अच्छी बातें हो सकती हैं उन्हें अपने व्यवहार में लाते हैं। इन्हीं सब अच्छी आदतों अथवा सद्गुणों से ही हमारे प्रभावशाली व्यक्तित्व का निर्माण होता है। लोग भी इन्हीं अच्छी आदतों व सद्गुणों के कारण ही सम्मान देते हैं। लेकिन यह तभी संभव है जब तक हम अपनी अच्छी आदतों व सद्गुणों को बनाए रखते हैं अथवा हमारे अंदर कोई भी दुर्गुण या विकार उत्पन्न नहीं होता।



कुन्दन लाल सहगल

यह महान गायक शराब पीने की लत के कारण समय से पहले ही चले गये

यदि हमारे अंदर सिर्फ एक दुर्गुण या विकार आ जाता है या हम जान-बूझकर या असावधानी से किसी ग़लत आदत के शिकार हो जाते हैं तो नदी के तटबंध में बने छोटे से सुराख से उत्पन्न तबाही की तरह ही जीवन में अर्जित व संचित संपूर्ण तपस्या का नष्ट होना अवश्यमभावी है। जब हमारी चारित्रिक स्थिति अपेक्षाकृत सुदृढ़ होती है और लोग हमें यथेष्ट सम्मान देते हैं तो हम सोचते हैं कि छोटी-मोटी

बातों से हमारे चरित्र या व्यक्तित्व पर कोई असर नहीं पड़ेगा। दोष हो अथवा गुण दोनों एक संक्रामक बीमारी की तरह होते हैं। यदि व्यक्ति एक अच्छाई पर भी दृढ़ हो जाए तो धीरे-धीरे बाकी की सभी अच्छाइयां भी उसमें आ जाती हैं। इसी प्रकार से एक बुराई भी असंख्य बुराइयों को आकर्षित करने में सक्षम होती है। यदि किसी व्यक्ति में कोई दोष उत्पन्न हो जाता है तो उसमें एक दोष के साथ धीरे-धीरे असंख्य अन्य दोष

भी स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं।

जिस प्रकार से एक मामूली सा छिद्र एक बहुत ही मजबूत बाँध को नष्ट कर सकता है उसी प्रकार से एक दोष इंसान को रसातल में पहुँचा सकता है, उसे नष्ट कर सकता है। उसके गुणों और सौंदर्य को ही नहीं उसकी भाक्ति व साहस को भी नष्ट कर सकता है। एक सच्ची घटना का वर्णन कर रहा हूँ। एक अत्यंत बलधाली व साहसी व्यक्ति की कहानी है यह। वह अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्वामी था। अच्छा व्यवसाय था। न सिर्फ़ पैसे की कमी नहीं थी अपितु हमेशा सबकी मदद करने को भी तैयार रहता था। कभी किसी को निराश नहीं लौटाया। लोग हमेशा उसका साथ पाने को बेचैन रहते थे क्योंकि उसके साथ का अर्थ था जीवन में उत्साह का संचार। लोगों की बड़ी से बड़ी समस्याओं को चुटकी बजाते हल कर देना उसके बाँए हाथ का काम था।

उसकी इन्हीं आदतों व व्यवहार के कारण लोग उसे बहुत पसंद करते थे। उसका व्यवसाय कहीं दूर किसी बाहर में था। कई लोग तो उसे एक छोटे से देश का राजा ही समझते थे। हमेशा पाँच-सात लोगों से घिरा रहता था। उसे कुश्ती का भी शौक था। अपने से बलशाली कई पहलवानों को उसने किस तरह से घूल चटाई थी लोग आज भी उसकी चर्चा करते हैं। उसमें भी एक दोष उत्पन्न हो गया था। एक लत लग गई थी उसे। वो लत थी मद्यपान करने की। कहीं किसी अवसर पर दो घूँट मदिरा हलक से नीचे क्या उतरी कि आदत बन गई। पहले स्वास्थ्य कमज़ोर हुआ। फिर कई असाध्य बीमारियों ने आ घेरा। शरीर सूखकर काँटा हो गया और कांतिहीन भी। व्यवसाय बुरी तरह

से प्रभावित होने लगा। व्यक्तित्व का आकर्षण कम होता चला गया और मात्र 45 या 46 साल की उम्र में इस नश्वर संसार से विदा हो गया।

दोष चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो उसका प्रभाव हमेशा बड़ा व दीर्घकालीन ही होता है। उसे और बड़ा होते और अपने दूसरे साथियों को बुलाते देर नहीं लगती। जो लोग पहले से ही अच्छे नहीं हैं अथवा जिनमें अनेकानेक दोष हैं यदि उनमें दो-चार दोष और उत्पन्न हो जाते हैं तो भी कोई उनकी अतिरिक्त आलोचना नहीं करता और न ही उन्हें इससे कोई फ़र्क पड़ता है। यदि अच्छे लोगों में कोई बुराई आ जाती है तो वह फ़ौरन प्रकट हो जाती है और लोगों की बरदाश्त से बाहर भी। वास्तविकता ये है कि जो लोग जितने अधिक अच्छे होते हैं लोगों को उनसे उतनी ही अधिक अपेक्षाएं होती हैं। लोग अच्छे लोगों में कोई बुराई नहीं देखना चाहते।

यदि हमने अपने चरित्र अथवा प्रभावशाली व्यक्तित्व के निर्माण के लिए परिश्रम किया है तो उसे अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए भी अत्यंत सतर्क व सचेत रहने की उतनी ही अधिक आवश्यकता है। प्रश्न उठता है कि मात्र चरित्र व व्यक्तित्व की ही चिंता क्यों? कारण स्पष्ट है। यदि धन-संपदा अथवा स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है तो उसे परिश्रम से पुनः प्राप्त किया जा सकता है लेकिन चरित्र अथवा व्यक्तित्व का निर्माण सरल नहीं। यह एक साधना के समान है। इनके नष्ट हो जाने पर इनकी क्षतिपूर्ति असंभव है। अतः इन दुर्लभ रत्नों को अपने हाथों से खिसकने से रोकना अति आवश्यक हो जाता है। इसी में निहित है मनुष्य जीवन की सार्थकता व चरितार्थता भी।

आत्मा का हनन न होने दें

किसी भी व्यक्ति की मृत्यु उसके सम्बन्धियों, मित्रों और चाहने वालों के लिये दुख दाई होती है। पर इस से भी अधिक दुखदाई हालत मनुष्य के लिये वह होती है जब वह जीवित तो होता है, पर अपनी आत्मा को मार कर जी रहा होता है। आत्म हनन कर जीने से कहीं अच्छा होता है कि व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाये।

In Bible, it is said, “What shall it avail a man if he gains the whole world but loseth his own soul. यानी कि मनुष्य अपनी आत्मा का हनन कर सारे संसार को भी विजय कर लेता है जब भी वह जीत किसी काम की नहीं।

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रुपये है। जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रुपया भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकाउंट (Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते हैं। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है। मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। **Book is in English** कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। **Stories are on various aspects of human life.**

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172-2662870, 9217970381

प्रकाश औषधालय
थोक व परचून विक्रेता
हमदर्द, डबार,
वैद्यनाथ, गुरुकुल, कांगड़ी,
कामधेनु जल व अन्य
आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

तप क्या है

दुख सुख, हार जीत और मान अपमान में एक जैसा ही रहना और व्यवहार करना ही तप है।

देश राज्यों और सूबों को जीतने वालों से वह अधिक शक्तिशाली है जिसने अपने आप को नियन्त्रण में किया हुआ है।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

GOD'S INVISIBLE HAND IS ALWAYS THERE TO SUPPORT US

Dr. Om Parkash Setia



God is kind, merciful and helpful. He protects and supports all creatures on this earth. He is the creator, sustainer and protector of all. Many a times we may feel shattered and start thinking that we have no body to look to, but His invisible Hand is

on work and takes us out of the trouble, in the same way, as finding threat to the safety of her child, mother rushes and takes him in her lap.

hunger is unbearable, do something.” She took them in her lap and said, “It is God, who is giving food to all creatures. You ask from Him and He'd definitely give.” The small children took a paper and wrote their request on that. Thinking, that the Postman would carry their request letter to the Almighty God, they went to the nearby Letter Box but were not able to reach the opening of the Letter Box due to their short stature despite repeated attempts. One wealthy person, who was going on routine morning walk, glanced their struggle. Having understood their problem, he went to them



Seek refuge in the Supreme Almighty and trust Him entirely. Though storm howls, darkness becomes deeper but His light will continue to shine on us. He is nearer to us than our heart beats and closer to us than our breathings.

Here is a true story of pre-partition days. A young widow in Amritsar would do petty jobs to bring up her two small sons. Once she fell sick and remained confined to bed for number of days. Whatever little she had stored for the rainy days was finished and the situation reached to such an end that even arranging one time meal for her children became a problem. One day when pangs of hunger had broken down, the children went crying to their mother who was on bed, “Ma,

and said, “Give this to me. I will put it inside.” He took that letter from them, but when he saw that the letter was addressed to God, he became curious and read the contents. He understood everything and told them that till such time they are not on their feet, he'd take care of their food and education. God is taking care of all creatures.

D.Sc. (Medicina Alternativa), RMP
(Homoeopathy), House No. 464,
Sector 32-A, Chandigarh-160030, India
Mobile no : +919872811464
Land line no. : 0172-2660466

संवेदनशीलता आदमी को देवता भी बना सकती है

संवेदनशीलता एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति को बहुत उपर उठा देता है और देवता भी बना सकता है। श्री गौतम कुमार की यह कहानी इस बात को ब्यान कर रही है।

मेरे पापा आर्मी में थे। अगर पापा का तवादला होता तो पूरे परिवार को उनके साथ जाना पड़ता था। मेरी शुरूआती की पढ़ाई अलग-अलग जगहों पर हुई। जिस कारण जिन्दगी की विविधता को बड़े करीब से देखा। दसवीं के बाद मार्केटिंग का काम किया। खेलने का मुझे बहुत शौक था और राज्य स्तर पर बैडमिंटन खेला। गोवा युनिवर्सिटी से एमसीए करने के बाद छह

साल तक एक कम्पनी में काम किया। कुछ समय बाद नौकरी छोड़ दी और बंगलोर में एक्टिंग का दरवाजा खटखटाया। लेकिन वहां जाने के बाद मैं न घर का रहा न धाट का। धीरे-धीरे तनाव मुझ पर हावी होने लगा। सड़क किनारे अक्सर मैं बेसहारा, गरीबों अनाथों बीमारों और गरीब लोगों को देखता। उनकी तकलीफ को देखकर

सोचता था कि किस तरह की उपेक्षा उनको झेलनी पड़ती है। अक्सर हम ऐसे बेबस लोगों को देखते हैं और आगे निकल जाते हैं। मैं भी उन दिनों कुछ इसी तरह के अलगाव और उपेक्षा का सामना कर रहा था। उस समय मुझे ऐहसास हुआ कि अपने लिये तो सभी जीतें हैं पर दूसरों के लिये जीना ही असल जिंदगी है।

इसी सोच के साथ एक अनाथालय में नौकरी करने लगा। वहां रहकर विभिन्न पृष्ठभूमि के बच्चों से मुलाकात हुई। उनके परिवार और परिस्थितियों के बारे में जानकर पता चला कि जिंदगी की मुश्किलें क्या होती है। उस समय गरीबी के प्रभाव को मैंने करीब से महसूस किया वहां सहने वाले बच्चों की कहानियां

सुनकर मैं हैरान रह जाता था मुझे लगा कि मैं जो भी कर रहा हूं वह काफी नहीं। कुछ समय बाद 'सर्वनीडी' नामक एक संस्था शुरू कर दी। यह संस्था बेसहारा, बुजुर्गों, और अनाथ बच्चों के लिये काम करती है। मैंने देखा बड़ी संख्या में लोगों को भूखा सोना पड़ता है। जबकि बड़े-बड़े आयोजनों में काफी खाना बर्बाद हो जाता है। हम उस बचे हुये भोजन को इकट्ठा करके बेघर और भूखे लोगों में बांट देते। इस अभियान को हम 'अन्नदाता' कहते हैं। अब कुछ दानदाताओं की मदद से हम जरूरतमंदों को ताजा खाना भी मुहैया करवा रहे हैं। पहली बार हमने 50 लोगों को भोजन

करवाया था अब तो कई बार यह आंकड़ा 1000 को पार कर जाता है। आम दिनों में चार लोगों की टीम इस काम को अन्जाम देती है। और रविवार के दिन करीब 30 वालंटियर भी इस मुहिम का हिस्सा बन जाते हैं।

कुछ समय पहले गरीब लोगों के लिये एक एंबलेंस सेवा भी

शुरू की है। गरीब, अनाथ और स्लम एरिया के बच्चों के लिये हम एक अनथालय भी चला रहे हैं यहां उनकी पढ़ाई लिखाई के अलावा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिये कई तरह के स्किलज भी सिखाये जाते हैं इसी तरह वृधों और बेघरों की पहचान करके अन्हें वृधाश्रम भी पहुंचाया जाता है। वहां पहुंचाने के बाद भी हम उन बुजुर्गों का फालों अप हम लगातार करते हैं। किसी बेसहारा की अगर मौत हो जाये तो तो पूरे विधी विधान के साथ उसका अंतिम संस्कार कराना भी अब हमारी मुहिम का हिस्सा है। दूसरे लोगों से मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि अगर किसी को तकलीफ में देखें तो चुपचाप मत बैठो, कोइ पहल करो भले ही वह पहल छोटी सी हो।

Why is it harrowing for women to approach Police?

Neela Sood



Recently, during train travel when our train was nearing Ranchi Station, a young girl entered in our compartment. She looked panicked and asked for space to sit and without waiting for my nod sat near to me. Hardly a few minutes had passed when three boys also

entered. Spotting that girl there, they took position at a place from where they could have clear view of the girl. Their licentious conduct was conspicuous. After awhile train entered Ranchi platform and they got down after passing lewd comments. I was distraught and on spotting a Police Cop I asked the girl to report the matter to him. But, she held me back by saying—“This Police cop won't do anything rather it will add to my problems.” Girl got down, but the incident left me ruminating why it is harrowing for women to approach Police in India. Be it the recent Banglaru incident or the alleged Murthal rape, fact remains that there is very high underreporting of crimes on women in India.

The reasons which strike my mind are. First, a highly flawed recruitment process of Police cops. If British used to recruit cops with main stress on brawn and muscles—chest, height, weight etc., capable of brutally wielding lathi, their objective was to create fear in the minds of general public so that there was no dissenting voice. But, now when we are a fee democracy, objective is not to create fear but to remove fear for which we do not need police cops who have only brawn. On the other hand we need cops who are pleasing with good manners capable of giving required comfort level to the aggrieved when they approach in distress. Therefore it is a high time we change the recruitment process. I feel that at least 30 % cops should be from the field of behavioral sciences and it is they who should man the reporting rooms which should be separately located in Police stations. They should be without Police dress

because this dresses itself is fear creating. At present what we see in Police Stations that in the same room everything is going on. Station head is generally a very busy person who is all the time glued to a mobile or phone. Since he has to speak to persons of different shades, invariably expletives in local dialect form the part of his communication. In



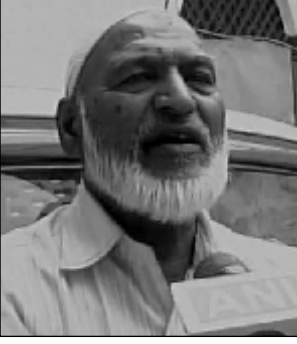
such an environment any woman feels uncomfortable if not scared, at least who visits for the first time.

Second, at least once in a month, senior Police persons should visit local women colleges, schools, private enterprises to have an informal chat with females. But they should go in ordinary dress and without their mobiles. Only then they can give time in a relaxed environment.

Wives of the police officers and their daughters can play a very important role to sensitize them when it comes to being respectful to women folk. Police officers need to give a thought why women feel insecure and uncomfortable in their presence, while it should be other way round. Fact remains that they are viewed demeaning women

But nothing will happen unless we stop recruiting people only with physical attributes. It is a flawed notion that well built cops can take the goons head on. Experience tells that they are the first one to make a retreat when their physique has any role to play.

मोहम्मद सरताज को सलाम



उत्तर प्रदेश में ए टी एस के हाथें लखनऊ में हुई मुठभेड़ में मारे गये संदिग्ध आतंकवादी सैफुल्लाह के पिता मोहम्मद सरताज ने उसका शव तक लेने से इंकार कर आतंकवाद के खिलाफ एक बड़ी मिसाल पेश की है। मोहम्मद सरताज

ने कहा है कि जो देश का नहीं हुआ, वह हमारा नहीं हो सकता। जो पिता हैं वही उनके इस अनूठे त्याग और देश प्रेम को प्रणाम कर सकते हैं। वरना हमारा पुत्र प्रेम अन्य सभी प्रेमों और सिद्धान्तों से उपर ही होता है। यही नहीं उन्होंने यह भी कहा कि वह आवेश में आकर ऐसी प्रतिक्रिया नहीं कर रहे। आज जब कि हिन्दु मुसलमान के नाम पर

देश के बंटने वाली घटना को 70 साल हो रहें हैं हम हिन्दुओं को यह मन से निकालना होगा कि हर मुसलमान देश द्रोही है। उन में अधिकतर दो समय पेट भरने की समस्या से घिरे हुये हैं ऐसे में अगर कुछ मजहबियों की बातों का शिकार हो जातें हैं तो इस का अर्थ यह नहीं कि हम भारत में बस रहें 25 करोड़ मुसलमानों को ही शक की नजर से देखते रहें। कुछ कमियां उन में हैं तो कुछ हम हिन्दुओं में भी। जिस किसी में भी बेवजह घृणा है चाहे वह हिन्दु है या मुसलमान या सिक्ख उस का वहिष्कार होना चाहिये। मन में घृणा है तो आपकी आरती, हवन, पूजा, पाठ और अध्यात्मिक उपदेश सब व्यर्थ है। जो कोई भी संघटन यह कर रहा है उस से अपने आप को और बच्चों को दूर रखें। पहले हम प्रेम का भाव दिखायेंगे तभी दूसरे से हम इस की अपेक्षा कर सकते हैं।

मां के गहने

उन्नीसवीं शताब्दी के आखरी वर्ष थें ठाकुरदास नामक एक बजुर्ग सज्जन कलकता में रहते थें परिवार छोटा था। केबल एक बच्चा और पत्नी, पर फिर भी भरन पोषण ठीक से नहीं हो पाता था, इसलिये वे मेदनीपुर नाम के गांव में आकर रहने लगे जहां ठाकुर दास को दो रूपये महीन की नौकरी मिल गई, पर कुछ ही समय बाद उसका देहान्त हो गया। माँ बेटे का गुजारा किसी तरह चलता रहा। एक दिन रात के समय बेटे ने मां के पैर दबाते हुये कहा— मेरी इच्छा है कि मैं पढ़ लिख कर बहुत बड़ा विद्वान बनूं और आपकी खूब सेवा करूं। मां ने चुस्की लेते हुये कहा—मेरी सेवा कैसे करेगा? बेटे ने कहा—मां तुमने बड़ी तकलीफ के दिन गुजारे हैं। मैं लुम्हें अच्छा खाना खिलाउंगा, बढ़िया कपड़े ला कर दूंगा और तुम्हारे लिये गहने भी बनवाउंगा।



मो बोली—बेटा बाकी तो सब ठीक है पर गहने मेरी पसंद के ही बनवाना। पुत्र ने झट से मां के पसंदिदा गहनों के बारे में पूछा।

मां ने कहा पहला गहना तो यह है कि इस गांव में सकूल नहीं है। दूसरा गहना है , दवाखाना, जो अभी नहीं हैं

तीसरा गहना है गरीब बच्चों के रहने की व्यवस्था

बेटे ने हामी भर दी। तभी से उसे कुछ करने की धुन सवार हो गई। पर वह अपनी मां को दिये वचन को सदैव याद रखता था।

जब वह पढ़ लिख गया तो वह अपने गांव में ही नहीं अपितु दूसरे स्कूलों में भी यह तीनों खुलवाता गया। यह मातृभक्त और कोई नहीं ईश्वरचन्द्र विद्यासागर थे।

Why did Punjab behave differently from Uttar Pradesh ?

I have been reading English Newspapers for the last almost 55 years but with greater penetration in the last twenty years only. What I have been able to conclude that as a matter of policy most of country's leading English dailies choose to be pro-establishment and do not take much time to change their stance as the governments at the centre change.

It is almost a week when results to the five state assemblies were declared but entire electronic and print media with exception of the Tribune rushed to be the part of BJP's euphoria and celebrations. Agreed, Uttar Pradesh and Utrakhand were won by the BJP hands down but there were astonishing decimation of BJP in Punjab and Goa where it was in rule. In Goa, BJP's six out of eight cabinet Ministers lost the polls. **Today when Modi is BJP and BJP is Modi**, entire credit for BJP's success is

immediately transferred to Modi. Nobody in BJP is interested to analyze whether success was because of the positive votes or negative ones, if anyone dares than his career is threatened. Therefore all newspapers are flush with articles singing paeans on Modi. Whether you are an industrialist or Journalist, your article will be accepted for publication if it is full of accolades for Modi and his policies and it will be in trash if it aims at showing true colours of Modi. This is the one reason why we have not seen even a single article which aimed at highlighting a big difference in the behavior of the voters of Punjab and Goa viz. a viz. of Uttar Pradesh. **After all Punjab may be a small state when compared with UP but it is one of the most important**

states when it comes to productivity, industrialization, per capita income, agriculture output and not to forget national renaissance. Punjab is credited with producing maximum freedom fighters and leaders who influenced Indian freedom struggle. In a way it has been the cradle of thinkers and revolutionaries. What the people of this state think really matters.

Therefore the big question that is haunting the minds of many who believe in thinking rationally & dispassionately is that why Punjab and Goa voters rejected Modi completely while in UP and

Utrakhand, he had an unprecedented success. In Punjab BJP has the lowest vote share in last 20 years. . For this we have to look in to a few important parameters and most important being per-Capita income which influences all other parameters whether health or education. As per

2015 figures, **Per capita income Rs 2,24, 138 in Goa, Rs 92639 in Punjab and Rs 36250 in UP** against Rs 63460 all India . While Goa and UP are poles apart, in case of Punjab it is more than three times. The expectations of the people with so huge variance in their income level cannot be same. In case of UP, it is the question of two square meals for vast majority, while in Punjab and Goa, the expectations jump to higher level and it is the job opportunities and better avenues of education and advancement. Also, the caste and religion phobia, our leaders create, has greater impact on lower strata and does not necessarily work in the well off class. Third, as a dream merchant who believes in launching radical and catchy schemes, you may be able to



mesmerize people once but not all the times. Those who already trusted Modi three years back, look at the new promises with a pinch of salt. This is exactly what happened with the people in Goa and Punjab. By virtue of higher literacy level and good global connectivity, they have better understanding and grasping of the issues. **They are in position to judge how many jobs were created in last three years or it was other way round i.e. loss of jobs occurred, a catchy scheme of 2014 Parliamentary elections.**

But, then one can question why Bihar with same socio-economic conditions what UP has, did not vote Modi, a year back. The simple answer is Nitish, the CM of Bihar had taken good care of the state for almost a decade. State saw unprecedented development, around 13%. So, people had to choose between dreams and the actual performance and they wisely opted for latter.

On the basis of the resounding success in UP, to say that demonetization is well accepted is overstatement. Demonetization has affected the ones who had money, not the ones who struggle for square meals or thrive on schemes like MINERGA or subsidies or free doles. In a state where per capita income hovers around Rs 30000, majority are in this category so they remained unaffected and rather were happy to find that those who had earned had to part with that in the garb of cleansing of society from corruption. Let me reiterate it affected those who labour and earn and had money.

But then affirmative mandate is that where the

Govt. in power earns second term. Somehow it has not happened in any of the five states where even BJP or its alliance was in power so this type of euphoria what BJP has demonstrated is unjustified. In UP vote is against Goondaism and bad governance coupled with infighting, in Utrakhand, highly corrupt and questionable means adopted by the ex CM Rawat, in Goa against corruption at lower level, in Punjab it was against the bad image of SAD/Badals, though their second innings was better than the first one and having seen Captain's rule from 2002-07, I doubt he can do better than his



predecessors.

We saw Mayawati coming to power in UP in 2007 and based on that success she was projected to be the future PM by our media but today her political existence is under threat. So where Modi stands will be clear only when 2019 parliamentary elections take place. To draw any conclusion on the basis of state assembly elections can be fallacious as it happened in 2004. Feel good factor created by BJP's India shining programme had even more resonance than what we see now and Pramod Mahajan was a greater showman than what Narendra Modi is.

Bhartendu Sood

सम्पादकिय

महर्षि दयानंद तो ऋषि थे

हम सभी जानते हैं कि महर्षि दयानंद सत्य तक पहुंचने के लिये सभी धर्मों के विद्वानों से विचार विमर्श करते रहते थे और उन्होंने सभी धर्मों और मतों के गुरुओं से शास्त्रार्थ भी किये। इस सब के बावजूद भी लाहौर में जब वह पधारे व कोई भी हिन्दु व्यक्ति पण्डितों से भय के कारण उनको स्थान नहीं दे रहा था तो एक मुसलमान ने उन्हें अपनी कोठी निवास के लिये दी जहां से वह दो महीने तक अपने प्रवचन करते रहे। यही हाल रावलपिण्डी में हुआ। वहीं वह एक पारसी सेठ के घर रहे और प्रचार करते रहे।

उन्होंने न केवल हिन्दु, बल्कि अन्य धर्मों में माने जा रहे पाखाण्डों और अन्धविश्वासों के विरुद्ध भी निर्भय हो कर आवाज उठाई और समकालिन अन्य अनेक मताबलम्बियों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित किया।

परन्तु इस सब के बावजूद दूसरे धर्मों वाले उन्हें बहुत आदर देते। कारण उन सब को मालुम हो गया था कि वे सच्चाई को निर्भय हो कर कहने का साहस रखते थे और इस बारे में उनका सबसे तीखा वार हिन्दु साम्प्रदाय पर ही था। उनके प्रशंसकों में मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद खां भी शामिल थे। दोनों का समय समय पर विचार विमर्श होता रहता था।

पादरी स्काट को स्वामी जी भक्त स्काट कहते थे। वह प्रतिदिन स्वामी जी का उपदेश सुनने आते थे। एक दिन जब वह सत्संग में नहीं आये तो महर्षि ने पूछा—आज भक्त स्काट कहां हैं?

किसी ने उत्तर दिया—आज रविवार है। वह गिरजाघर में

सत्संग कर रहें होंगे। स्वामी दयानंद ने कहा—अच्छा चलो आज गिरजाघर चलते हैं।

व्याख्यान दे रहे भक्त स्काट ने जब महर्षि को देखा तो उन्हें सम्मान सहित मंच पर ले गये और उनका भाषण करवाया।

हम जानते हैं कि महर्षि दयानंद का देहान्त जहर देने के कारण अचानक हो गया था। उन्होंने अपना कोई उत्तराधिकारी मनोनीत नहीं किया था। जो उनके अग्रिम अनुयाई थे जैसे महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, पंडित गंरुदत और स्वामी श्रद्धानंद उन सभी ने स्वामी जी की विचारधारा को

अपने अपने ढंग से देखा। यही नहीं वे सभी स्वयं बहुत बड़े विचारक व चिंतक थे। ऐसे व्यक्ति भेड़चाल पर चलने वाले नहीं होते। उनके अपने निजी विचार भी थे जिनको उन्होंने स्वामी जी की विचारधारा के साथ

जोड़ कर आगे का कार्य किया। ऐसे में यह आवश्यक नहीं कि जो भी उन्होंने किया वह स्वामी जी की विचारधारा को पूरी तरह दर्शाता हो। दूसरी बात जो हमने ध्यान में रखनी है कि स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद अगले 70 वर्षों में भारत में और बाकी दुनिया में तेजी से हालात बदले। दो विश्व युद्ध हुये। आजादी के लिये जागृति आई, हिन्दु धर्म में चेतना आई, ऐसे में हिन्दु मुसलमानों के रिश्तों में दरार आई। इस सें आर्य समाज के नेता भी अछूते न रह सके। ये नेता मोहम्मद अली जिन्हा जैसे मझवी मुसलमानों के विरुद्ध खुल कर सामने आये और उन्हें बलिदान देने पड़े।

पर उनके कार्यों को ऋषि दयानन्द के साथ जोड़ना गलत है। क्योंकि दयानन्द तो ऋषि थे जो कि सार्वभौमिकता से उपर



उठे हुये थे । संत अरविन्दों ने उन्हें अपने समय का सब से बड़ा ऋषि कहा तो अवश्य उन में ऐसे गुण देखने के बाद ही कहा ।

इसलिये अच्छा होगा आर्य समाज के बाद के नेताओं के कार्यों को ऋषि दयानन्द के साथ न जोड़े । उन सभी नेताओं ने भी बहुत महान कार्य किये चाहे महात्मा हंसराज थे या स्वामी श्रद्धानन्द पर वे उनके अपने ऐजेण्ड थे चाहे कुछ हद तक ऋषि दयानन्द की विचारधारा से कहीं प्रभावित थे । उनके निजी कार्यों को ऋषि दयानन्द से जोड़ कर हमने ऋषि दयानन्द के बारे में कई गलत धरणाओं को जन्म दिया है, कईयों का इस में निजी स्वार्थ भी होता है । जैसे कि दयानन्द के नाम पर घर से भागे लड़के लड़कियों की मोटी रकम वसूल कर शादीयां करने की आर्य समाजों में बाड़ आ गई । इन आर्य

समाज के आचार्यों ने दयानंद का चित्र लगाकर आर्य समाज बना ली जहां केवल ऐसे संस्कार किये जाते थे । इस कारण आर्य समाज और स्वामी दयानंद का नाम बहुत बदनाम हुआ । लोग पूछने लगे ———आपके आर्य समाजों में यही किया जाता है ।

शुद्धि अन्दोलन स्वामी श्रद्धानन्द का ऐजेण्ड था । पर यह कहना कि ऋषि दयानन्द ने इसे आरम्भ किया था या वे इसके प्रेरणासूत्र थे बिल्कुल गलत है । इसी तरह गुरुकुलों की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द का ऐजेण्ड था और डी ए वी की स्थापना महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय और गुरुदत्त का ऐजेण्ड था । ऋषि दयानन्द ने तो विद्या के प्रसार का अवाहन दिया था । अनुयाईयों की अपनी सोच थी । इसलिये महर्षि दयानन्द को किसी के साथ न जोड़ें, यही मेरा सुझाव है ।

The path of perseverance

“Genius is 1% inspiration and 99% perspiration,” scientist Thomas Alva Edison declared. This pronouncement has passed into proverbial parlance. But like most maxims, it is more easily admired than absorbed. While 'inspiration' sounds impressive, 'perspiration' seems unpleasant. How simple life would be if struggle was not a stepping stone to success! Through the ages, discerning people have realised that ideas and ideals, however lofty, must be buttressed by dogged determination

Dr K R Narayanan, the able statesman, who became our tenth President, is the shining example of this maxim. Born in 1920, Kocheril Raman Narayanan walked 15 km to school, only to encounter hurdles there.

Shortly before his death in 2005, Dr Narayanan told a journalist: “We had to pay school fees and my father had very little money. The management cooperated up to a point but, after months of no fees, they sent me home. My father scraped



together some money and sent me back. Frequently, I had to stand in the corner or on the bench for non-payment of fees.” Occasionally, the impoverished student was not admitted to the classroom. Standing outside, he strained to hear

the lessons being taught. Under such circumstances, anyone else might have abandoned education. Not so Dr K R Narayanan! Undeterred by hardship, he resolutely continued to acquire knowledge. The young man's persistence bore fruit. Aided by a scholarship from the royal family of Travancore, he did exceedingly well in his later academic career. He secured the

first rank at the University of Travancore examination in 1943, setting foot on the road to Rashtrapathi Bhavan, which he occupied in 1997. Let us, like great personages, past and present, enjoy the satisfaction of attaining our goals. First, however, we must patiently pursue the path of perseverance!

पिटारा

विनोद स्वरूप, सुन्दरनगर (हि.प्र.)



हैल्थ आर्गेनाइजेशन के सर्वे के आधार पर भारत के नागरिकों की औसत आयु 65 वर्ष है। इससे अधिक आयु में जो लोग सांस ले रहे हैं वे उन्हें बोनस रूप में मिले हैं। इन अतिरिक्त पलों को क्यों न हम सामाजिक उत्थान

और जनसेवा के कार्यों में खर्च करें। समाज और जरूरतमंदों की सेवा करने से जो सुकून दिल और दिमाग को मिलता है उस का कोई मोल नहीं। इससे अपूर्व आत्मतुष्टी का आभास होता है। जीवन के इस पड़ाव में भी हम लोग अनेक मजबूरियों के कारण घर-गृहस्थी, नाती-पोतों और रिश्तेदारों की तामीरदारी में उलझे रहते हैं। यह सब कुछ हद तक जायज़ है किन्तु हमें एक बात अपने जहन में यह सोच कर भी चलना है कि जब हम इस संसार में नहीं

थे तो भी काम चलता था। यदि आप मेरी बात को अन्यथा न लें तो मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि जब हम इस संसार में नहीं रहेंगे तब भी काम

रुकेंगे नहीं। शायद इससे भी बेहतर ढंग से होंगे। केवल यह बीच का समय है जो हमें सांसारिक क्रिया-कलापों में उलझाये रखता है। आओ कुछ ऐसा शुभ कार्य करने का संकल्प करें ताकि कबीर जी की ये बात सत्य सिद्ध हो जाय :-

कबीरा जब हम जन्मया, जग हंसा हम रोये।

ऐसी करनी कर चलो, हम हंसे जग रोये।

पाठकों को यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि

आज के वातावरण में जल, वायु, वनस्पति एवं समस्त खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो चुके हैं। जिस कारण कोई भी व्यक्ति अपने को 100 प्रतिशत स्वस्थ नहीं कह सकता। एक समय था जब जठराग्नि इतनी प्रज्वलित हुआ करती थी कि लकड़, पत्थर सब हजम हो जाते थे किन्तु दाल-चावल और सब्जी-चपाती के अतिरिक्त कभी एकबार, लोहड़ी, दिवाली पर ही **Special Item** खाने को मिलती थी। आज सुनहरा समय है, कि हम भान्ति-भान्ति के स्वादिष्ट व्यंजन खरीदने की सामर्थ्य रखते हैं किन्तु डॉक्टर के अनुसार हम उन्हें खा नहीं सकते। कैसी विडम्बना है, जब दांत स्वस्थ थे तो चने उपलब्ध न हुए, आज चने हैं तो दांत सलामत नहीं।

मेरी मनसा आप को कोई उपदेश देने की नहीं है, मेरा यह व्यक्तिगत विचार है कि हमें सांसारिक चिन्ताओं और झमेलों का बोझ अपने दिल और दिमाग

में लिए विचरण नहीं करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुख-दुख, खुशी-गमी उसी प्रकार आते जाते हैं ज

ज " स

धूप-छाया, लाभ-हानि और रात-दिन। हमें अपनी चिन्ताओं का पिटारा उस प्रभु के हवाले कर देना चाहिए तथा सच्चे मन से प्रार्थना करनी चाहिए कि मैं अब पूरी तरह से चिन्तामुक्त हूँ। जो भी चिन्ता फिक्र है वह सब तरे हवाले। ईश्वर तू मुझे इस पिटारे से अच्छे-अच्छे वरदान चुन-चुन कर मेरी झोली में डालते जाना। यदि खुशी का समय आये तो मैं अपना आपा न खोऊँ और यदि दुःख के पल मुझे झेलने पड़ें तो हे प्रभु! मुझे इतना धैर्य भी प्रदान करना कि मैं विचलित न हो



"स्वास्थ्य ही असली धन है, सोने और चाँदी के टुकड़े नहीं।"

- Mahatma Gandhi

Quote.javaTpoint.com

जाऊँ ।

नित्य प्रति अपने व्यस्त कार्यक्रम से थोड़ा सा समय निकाल कर प्रभु स्मरण करने से हम मानसिक शान्ति प्राप्त कर अपने स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं, क्योंकि मैडीटे इन तनावमुक्त रहने के लिए रामबाण है। युवाओं को चाहिए कि वे गीता पढ़े व उस से भी जरूरी है मैदान में फुटबाल खेलें। इस बात में जो रहस्य छिपा है,

गहन मनन और चिन्तन से हमें मालूम होता है कि व्यक्ति स्वस्थ रहकर अनुपासन, सहयोग, कर्तव्यपरायणता और अपने दायित्व की पूर्ति जैसे सदगुणों को प्राप्त कर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य से ही सामाजिकता, आध्यात्मिकता, देश सेवा से अपना और समाज का कल्याण कर सकता है क्योंकि गीता जैसे रहस्यपूर्ण ग्रंथ का उपदेश महाबल गाली, धनुर्धारी अर्जुन जैसे योद्धा को दिया गया था, किसी तपेदिक के मरीज को नहीं।

स्वस्थ व्यक्ति ही इस संसार के आमोद-प्रमोद, रागरंग एवं मनोरंजन का भरपूर आनंद उठा सकता है। सामाजिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों में अपना योगदान देकर पुण्य का भागीदार बन सकता है। रोगी काया वाला व्यक्ति इन सभी लाभों से वंचित रहता है। उसे इन बातों में कोई रुचि नहीं होती। ध्यान रहे बीमार होने पर दवाई कैमिस्ट की दूकान से खरीदी जा सकती है किन्तु स्वास्थ्य कदापि नहीं। योगाचार्य स्वामी रामदेव ने समस्त संसार को रोगमुक्त करने का जो बीड़ा उठाया है उस स्वास्थ्य क्रान्ति में हमें अपना योगदान देकर नित्य प्रति प्राणायाम और योग करना

चाहिए और प्रचार कर इस पूर्णाहुति में सहभागी बनने का व्रत लेना चाहिए। फास्ट फूड, पीजा, वर्गर सभी प्रकार के बाजारु भोजन जो आज के युवावर्ग की पहली पसंद हैं, अपने निरोग शरीर को रोगी बनाने के



लिए निमंत्रण देने वाले हैं। घर को साफ सुथरा, सादा और ताजा, पोष्टिक एवं सांत्विक भोजन उत्तम स्वास्थ्य के लिए वरदान है। भोजन हमेशा

तनावमुक्त, भांतचित्त होकर चबा-चबा ग्रहण करना चाहिए ताकि दांतों का काम आंतों को न करना पड़े। क्रोध एवं तनाव में किया भोजन ज़हर बन जाता है। ये स्वस्थ रहने के टिप्स हैं। **अस्वस्थ प्राणी 'न दीन का न दुनिया का'** रोगी व्यक्ति अपने परिवार, समाज या राष्ट्र का हित तो दूर की बात वह अपना भला भी नहीं कर सकता। वह तो पूर्णरूपेण दूसरों पर निर्भर रहता है। स्वस्थ काया सर्वोत्तम वरदान है। 'शरीर माध्यम् खलु धर्मसाधनम्', 'स्वास्थ्य हजार नेमत', जिसका शरीर स्वस्थ है समझ लो वह संसार की सारी-धन सम्पति और सुख-सुविधाओं का स्वामी है। कवि ने ठीक ही कहा है :-

'स्वास्थ्य ही संसार में सारे सुखों का मूल है, स्वास्थ्य की अवहेलना करना बड़ी भूल है। स्वास्थ्य के बल की बदौलत घर रहे धन से भरा, जीवन विटप नर का सदा ही स्वास्थ्य रखता है हरा।'

श्री विनोद स्वरूप सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश से छपने वाली पत्रिका " बन्दना" के मुख्य सम्पादक है और हिन्दी के जाने माने लेखक है।

करोड़ों लोग बुनियादी सुविधाओं से वंचित और मंदिर में करोड़ों का चड़ावा---वाह रे हमारा लोकतन्त्र

तेलंगाना के मुख्यमंत्री बनने के बाद चन्द्रशेखर राव अपने परिवार और कैबिनेट मंत्रियों के साथ तिरुपती स्थित बाला जी मंदिर खास पूजा अर्चना के लिये गये। इस की खास बात यह थी कि उन्होंने भगवान वेंकटेश्वर को पांच करोड़ से भी अधिक के आभूषण चड़ाये।

उनका कहना था कि उन्होंने भगवान से तेलंगाना को अलग राज्य बनाने की मन्नत मांगी थी और उस समय उन्होंने 4 करोड़ का मुकट चड़ाया था।

अब सवाल यह है कि ईश्वर के अस्तित्व का सही ज्ञान न होने के

कारण मुख्य मंत्री महोदय सरकारी खजाने से जनता के धन को इस तरह कैसे प्रयोग कर रहे ह? ऐसे पूजा स्थलों पर पहले से ही अरबों खरबों का साना पड़ा हुआ है।

इस देश की आधी समस्याएँ खत्म हो जायें अगर हम यह

समझ जायें कि ईश्वर तो हमारे अन्दर ही वास करता है। यह मानव और यह अदभूत संसार का सौंदर्य ईश्वर की रचना को बताता है। न उसे श्रींगार की आवश्यकता है और न ही धन की। जो सब को दे रहा है उसे आप क्या देगे।



प्रधानमन्त्री महोदय, किसी गरीब ने अपने भविष्य के लिये अगर कुछ धन रखा था वह तो आप ने नोटबंदी से निकलवा लिया, पर इन पूजा स्थलों पर क्यों कुछ नहीं करते जहां अरबों खरबों में सोना पड़ा है।

आज आर्य समाज ही नहीं बहुत से दूसरे मत भी यह कह रहे हैं ईश्वर तो हमारे अन्दर ही है, मेरा उन सब से पूछना है तो क्यों नहीं आवाज उठाने का साहस करते। बात हवन, पूजा, ध्यान और योग तक ही क्यों रह जाती है?

तप क्या है

दुख सुख, हार जीत और मान अपमान में एक जैसा ही रहना और व्यवहार करना ही तप है।

देश राज्यों और सूबों को जीतने वालों से वह अधिक शक्तिशाली है जिसने अपने आप को नियन्त्रण में किया हुआ है।

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org



**Hall is under construction in Maharishi Dayanand Bal Ashram.
If any Donor is interested in helping then please contact us.**

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा

लेखराम (+91 7589219746)



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निर्माण के 63 वर्ष

गौस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहाँ उपलब्ध है)



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajjiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

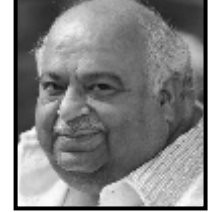
Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



Mrs Kiran Ahuja
has donated Rs 1,00,000 (One Lakh)
in memory of her husband
Late Mr Madan Lal Ahuja



Late Mr Ashok Khanduja



Mrs Suman Nayyar



मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service



DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in